

गोस्वामी तुलसीदासजी

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

मूल गोसाईं-चरित

(गोस्वामी तुलसीदासजीका जीवन-चरित्र)



सोरठा—संतन कहेउ बुझाय, मूलचरित पुनि भाषिये ।
अति संछेप सोहाय, कहौं सुनिय नित पाठ हित ॥ १ ॥
चरित गोसाइं उदार, बरनि सकैं न हैं सहसफनि ।
हौं मतिमंद गंवार, किमि बरनौं तुलसी-सुजस ॥ २ ॥

तोटक

ऋषि आदि कबीस्वर ग्याननिधी । अवतरित भये जनु आपु बिधी ॥
सत कोटि बषानेउ रामकथा । तिहुं लोकमें बांटेउ संभु जथा ॥
दस स्यंदन बेद दसांगमयं । स्रुति त्रैबिधि तीनिउ रानिजयं ॥
श्रीराम प्रनव स्रुति तत्त्व परं । निज अंसनि जुत नरदेह धरं ॥
इमि कीन्ह प्रबंध मुनीस जथा । हरि कीन्ह चरित्र पवित्र तथा ॥
हनुमंत प्रनव प्रिय प्रान रसै । परतत्त्व रमै तिसु सीस लसै ॥
यहि भांति परात्पर भाव लिये । सुचि राम परत्व बषान किये ॥
मुनिराज रचे अद्भुत रचना । कपिराज सों कीन्ह इहै जँचना ॥
यह गुप्त रहस्य है गोइ धरैं । बिनती हमरी न प्रकास करैं ॥
तब अंजनि-नंदन साप दियो । हंसि कै मुनि धारन सीस कियो ॥

दोहा—सहनसीलता मुनि निरपि, पवनकुमार सुजान।
बहु बिधि मुनिहिं प्रसंसि पुनि, दिये अभय बरदान ॥ १ ॥

कलिकाल मैं लैहहु जन्म जबै। कलि ते तव त्रान सदा करिबै ॥
तेहि साप के कारन आदि कबी। तमपुंज निवारन हेतु रबी ॥
उदये हुलसी उदघाटिहि ते। सुर संत सरोरुह से बिकसे ॥
सरवार सुदेस के बिप्र बड़े। सुचिगोत परासर टेक कड़े ॥
सुभ थान पतेजि रहे पुरषे। तेहिते कुल नाम पड़ो झुरपे ॥
जमुना तट दूबन को पुरवा। बसते सब जातिन को कुरवा ॥
सुकृती सतपात्र सुधी मपिया। रजियापुर राजगुरू सुपिया ॥
तिनके घर द्वादस मास परे। जब कर्क के जीव हिमांसु चरे ॥
कुज सप्तम अष्टम भानु तनै। अभिहित सुठि सुंदर सांझ समै ॥

दो०—पंद्रह सै चौवन बिषै, कालिंदी के तीर।
सावन सुक्का सत्तिमी, तुलसी धरेउ सरीर ॥ २ ॥

सुत जन्म बधाव लग्यो बजने। सजने छजने रजने गजने ॥
एक दासि कही तेहि औसर में। कहि देव बुलाहट है घर में ॥
सिसु जनमत रंचक रोओ नहीं। सो तो बोलेउ रामगिरेउ ज्यों महीं ॥
अब देषिय दंत बतीसी जमी। नहिं पोल्हड़ पांतिमै नेक कमी ॥
जस बालक पांच को देषिय जू। तस जन्मतु आ निज लेषिय जू ॥
अब बूढ़ि भई भरि जन्म नहीं। सिसु ऐसो मैं देषिउ तात कहीं ॥
महरी कहती सुनि संष धुनी। जबहीं सो सभय सिसुनार छुनी ॥
जो लोगाइ हतीं कपतीं बकतीं। कोउ राकस जामेउ कहि झपतीं ॥
महराज चलिय अब बेगि घरे। समुझाइ प्रसूति को ताप हरे ॥

दो०—उठे तुरत भृगुबंसमनि, सुनत चेरि के बैन।
ठाढ़ प्रसूती द्वार भे, पूरित जल सों नैन ॥ ३ ॥

छंद—पूरित सलिल दृग निरपि सिसु परिताप जुत मानस भये।
मन महं पुराकृत पापको परिनाम गुन बाहिर गये ॥
तब जुरे सब हित मित्त बांधव गनक आदि प्रसिद्ध जे।
लागे बिचारन का करिय नवजात सिसु कहं कहहिं ते ॥ १ ॥

दो०—पंचन यह निरनय किये, तीन दिवस पस्चात।
जियत रहे सिसु तब करिअ, लौकिक बैदिक बात ॥ ४ ॥

दसमी पर लागेउ ग्यारस ज्यों। घरि आइक राति गई जब त्यों ॥
हुलसी प्रिय दासि सों लागि कहै। सपि प्रान-पपेरू उड़ान चहै ॥
अब हीं सिसु लै गवनहु हरिपुर। बसते जंह तोरिउ सास ससुर ॥
तहं जोइबि पालबि मोर लला। हरिजू करिहैं सपि तोर भला ॥
नहिं तो ध्रुव जानहु मोरे मुये। सिसु फेंकि पंवारहिंगे भकुये ॥
सपि जान न पावै कोऊ बतियां। चलि जायहु मग रतियां रतियां ॥
तेहि गोद दियो सिसु ढारस दै। निज भूषन दै दियो ताहि पठै ॥
चुपचाप चली सो गई सिसु लै। हुलसी उर सूनु बियोग फबै ॥
गोहराइ रमेसं महेस बिधी। बिनती करि रापेबि मोर निधी ॥

दो०—ब्रह्ममुहूर्त्त एकादसी, हुलसी तजेउ सरीर।
होत प्रात अन्त्येष्टि हित, लैगे जमुना तीर ॥ ५ ॥

घरि पांचइ बार चढ़ै मुनिआ। निज सासके पायं गही चुनिआ ॥
सब हाल हवाल बताय चली। सुनि सास कही बहु कीन्ह भली ॥
घर माहिं कलोर को दूध पिआ। बिनु माय को है सिसु लेसि जिआ ॥

तंह पालन सो लगि नेह भरै । जेहि ते सिसु रीझइ सोइ करै ॥
यहि भांति सों पैंसठ मास गये । सिसु बोलन डोलन जोग भये ॥
चुनिआ सुरलोक सिधार गई । डस्यो पन्नग ज्यों सो कोरार गई ॥
तब राजगुरू को कहाव गयो । सुनि कै तिनहूं दुप मानि कह्यो ॥
हम का करिबै अस बालक लै । जेहि पालै जो तासु करै सोइ छै ॥
जनमेउ सुत मोर अभागो महीं । सो जिये वा मरै मोहिं सोच नहीं ॥

दो०—बेनी पूरब जनम कर, करमबिपाक प्रचंड ।
बिना भोगाये टरत नहिं, यह सिद्धांत अपंड ॥ ६ ॥

छं०—सिद्धांत अटल अपंड भरि ब्रह्मंड व्यापित सत जथा ।
जहं मुनिबरन की यह दसा तहं पामरन की का कथा ॥
निज छति बिचारि न राप कोऊ दया दग पाछे दियो ।
डोलत सो बालक द्वार द्वार बिलोकि तेहि बिहरत हियो ॥ २ ॥

सो०—बालक दसा निहारि, गौरा माई जगजननि ।
द्विज तिय रूप संवारि, नितहिं पवाजावहि असन ॥ ३ ॥

दुइ बत्सर बीतेउ याहि रसे । पुर लोगन कौतुक देषि कसे ॥
जिन जोह जसूस पै आय जकै । परिचय द्विज नारि न पाइ थकै ॥
चर नारि हती तहं सो परपी । जब माय पवाय लला टरषी ॥
परि पांय करी हठ जान न दे । जगदंब अदस्य भई तब ते ॥
सिव जानि प्रिया ब्रत हेतु हियो । जन लौकिक सुलभ उपाय कियो ॥
प्रिय सिष्य अनंतानंद हते । नरहर्य्यानंद सुनाम छते ॥
बसे रामसुसैल कुटी करिके । तल्लीन दसा अति प्रिय हरि के ॥
तिन कंह भव दरसन आपु दिये । उपदेसहुं दै कृतकृत्य किये ॥
प्रिय मानस रामचरित्र कहे । पठये तंह जंह द्विजपुत्र रहे ॥

दो०—लै बालक गवनहु अवध, त्रिधिवत मंत्र सुनाय ।
मम भाषित रघुपति कथा, ताहि प्रबोधहु जाय ॥ ७ ॥

जब उघरहिं अंतर दृगनि, तब सो कहिहि बनाय ।
लरिकाई को पैरिबो, आगे होत सहाय ॥ ८ ॥

सो०—संभु वचन गंभीर, सुनि मुनि अति पुलकित भये ।
सुमिरि राम रघुबीर, तुरत चले हरिपुर तके ॥ ४ ॥

पुर हेरि कै बालक गोद लिये । द्विजपुत्र अनाथ सनाथ किये ॥
कह्यो रामबोला जनि सोच करै । पलिहैं पोसिहैं सब भांति हरै ॥
सो तो जानेउ दीनदयाल हरी । मम हेतु सुसंत को रूप धरी ॥
पुरलोगन केर रजाय लिये । सह बालक संत पयान किये ॥
पहुंचे जब औधपुरी नगरे । बिचरे पुरबीथिन मां सगरे ॥
पन्द्रह सै इकसठ माघ सुदी । तिथि पंचमि औ भृगुवार उदी ॥
सरजू-तट विप्रन जग्य किये । द्विजबालक कंह उपबीत दिये ॥
सिषये बिनु आपुइ सो बरुआ । द्विजमंत्र सबित्रि सुउच्चरुआ ॥
बिस्मयजुत पंडित लोग भये । कहे देषत बालक बिग्य ठये ॥

दो०—नरहरि स्वामी तब किये, संस्कार बिधि पांच ।
राममंत्र दिय जेहि छुटै, चौरासी को नांच ॥ ९ ॥

दस मास रहे मुनिराज तहां । हनुमान सुटोला बिराज जहां ॥
निज सिष्यहिं विद्या पढ़ाय रहे । अरु पानिनि-सूत्र घोषाय रहे ॥
लघु बालक धारनसक्ति जगी । अनुरक्ति सभक्ति दिखान लगी ॥
हरषे गुनग्राम बिचार हिये । पद चापत आसिष भूरि दिये ॥
जबते जनमेउ तबते अबलों । निज दीन दसा कहिगो गुरुसों ॥

ठक से रहिगे सुनि बाल कथा । करुना उरमें उपजाइ व्यथा ॥
मुनि धीर भरे दृग नीर रहे । गुरु सिष्य दसा कवि कौन कहे ॥
समुझाय बुझाय लगाय हिये । कहि भावि भलाइ प्रसांत किये ॥
हरिप्रिय रितु लाग हेमंत जबै । सिष संग लै कीन्ह पयान तबै ॥

दो०—कहत कथा इतिहास बहु, आये सूकरषेत ।
संगम सरजू घाघरा, संत जनन सुष देत ॥ १० ॥

तंहवां पुनि पांचइ वर्ष बसे । तपमें जपमें सब भांति रसे ॥
जब सिष्य सुबोध भयो पढ़ि कै । मति जुक्ति प्रबीन भई गढ़ि कै ॥
सुधि आइ महेस सिषावन की । परतत्त्व प्रबंध सुनावन की ॥
तब मानस रामचरित्र कहे । सुनि कै मुनिबालक तत्त्व गहे ॥
पुनि पुनि मुनि ताहि सुनावत भे । अति गूढ़ कथा समुझावत भे ॥
यहि भांति प्रबोधि मुनीस भले । बसुपर्व लगे सह सिष्य चले ॥
बिस्राम अनेक किये मग में । जल अन्न को पेल मच्यो जग में ॥
कतहूं सुकृतिन उपदेश करैं । कतहूं दुषिया दुषदाप हरैं ॥

दो०—बिचरत बिहरत मुदित मन, पहुंचे कासी धाम ।
परम गुरू सुस्थान पर, जाय कीन्ह बिस्राम ॥ ११ ॥

सुठि घाट मनोहर पंच पगा । गंगिया कर कौतुक केलि झगा ॥
पुनि सिद्ध सुपृष्ठ प्रतिष्ठित सो । बहुकाल जतींद्र रहे जु नमो ॥
तंहवां हते सेष सनातन जू । बपुवृद्ध बरंच जुवा मन जू ॥
निगमागम पारग ज्योति फबै । मुनि सिद्ध तपोधन जान सबै ॥
तिन रीझि गये बटु पै जब ही । गुरु स्वामि सों सुंदर बात कही ॥
निज सिष्यहिं देइय मोहिं मुनी । तिसु वृत्ति दुनी नहिं ध्यान धुनी ॥

हौं ताहि पढ़ाउब बेद चहूं। अरु आगम दरसन पात छहूं ॥
इतिहास पुरानरु काव्यकला। अनुभूत अलभ्य प्रतीक फला ॥
विद्वान महान बनाउब जू। सुनि आपु महासुप पाउब जू ॥
दो०—आचारज बिनती सुनत, पुलकित भे मुनिधीर।
बटु बुलाय सौंपत भये, पावन गंगातीर ॥ १२ ॥
कछु दिन रहिगे जति प्रवर, पढ़न लगो बटु भास।
चित्रकूट कंह तब गये, लपि सब भांति सुपास ॥ १३ ॥
बटु पंद्रह वर्ष तहां रहिकै। पढ़ि सास्त्र सबै महिकै गहिकै ॥
करिकै गुरु-सेवा सदय तन तै। गत देह क्रिया करि सौ मन तै ॥
चले जनमथलीको बिपाद भरे। पहुंचे रजियापुरके बगरे ॥
निज भौन बिलोकेउ ढूह ढहा। कोउ जोवन जोग न लोग रहा ॥
इक भाट बपानेउ ग्राम-कथा। द्विजबंसको नास भयो सु जथा ॥
कह्यौ जा दिन नाइ से राजगुरू। तब त्याग की बोलेउ बात करू ॥
तंह बैठ रह्यो तप तेज धनी। तिन साप दियो गहि नागफनी ॥
षट मास के भीतर राजगुरू। दस वर्ष के भीतर बंस मरू ॥
सुनिकै तुलसी मन सोक छये। करि स्राद्ध जथाविधि पिंड दये ॥
दो०—पुरलोगन अनुरोधते, दियो भवन बनवाय।
रहन लगे अरु कहत भे, रघुपति-कथा सुहाय ॥ १४ ॥
जमुना पर तीरमों तारिपतो। भरद्वाज सुगोत्त को बिप्र हतो ॥
कतिकी दुतिया कर न्हान लगे। सकुटुम्ब सो आयउ संग सगे ॥
करि मज्जन दान गये तंहवां। तुलसी-सुत बांच कथा जंहवां ॥
छबि व्यास बिलोकि प्रसन्न भये। सब लोगन बूझि स्वठाम गये ॥
पुनि माघव मास में आय रहे। कर जोरि के सुंदर बात कहे ॥

महराति जवँ नगिचाय रहा । सपने जगदंव चेताय रहा ॥
सुभ राउर नांव वताय रहा । सव ठांव ठिकान जताय रहा ॥
हौं हेरत हेरत आयों इतै । मोहिं राषिय हौं अव जाव कितै ॥

दो०—सुनत विनय सोचन लगे, पुनि बोले सकुचाय ।
व्याह वरैषी ना चहौं, अनत पधारिय पाय ॥ १५ ॥

द्विज माने नहीं धरना धरिकै । नहिं पाय पियैं सनना करिकै ॥
दुसरे दिन जव स्वीकार कियो । तव विप्र हठी जल अन्न लियो ॥
घर जाय सोधाय के लग्न धरो । उपरोहित भेजि प्रसन्न करो ॥
इनतें पुरलोगन जोग दिये । सव साज समान वरात किये ॥
पंद्रह नै पार तिरासि विषैं । सुभ जेठ सुदी गुरु तेरस पै ॥
अविनाति लौं जु फिरीं भंवरीं । दुल्हा दुल्हीं की परीं पंवरी ॥
लल्ना मिलि कोहवर मांहि रसीं । वरनायक पंडित सों विहंसीं ॥
तिसरे दिन मांडवचार भयो । सुचि भगति सों दान दहेज दयो ॥

दो०—विदा करा दुल्हीं चले, पंडितराज महान ।
आये निज पुर अरु किये, लोकाचार विधान ॥ १६ ॥

पुर नारि जुरीं गुरु भौन गईं । दुल्हीं मुष देषि निहाल भईं ॥
हुलसी सुत देषिउ नारि छटा । मुख इंदु ते घूंघट कोर हटा ॥
मन प्रान प्रियापर वार दिये । जस कौसिक मेनका देषि भये ॥
दिन रात सदा रंग राते रहैं । सुष पाते रहैं ललचाते रहैं ॥
सर वर्ष पुरन्दर चाव चये । पल ज्यों रसकेलि में बीत गये ॥
नहिं जाने दें आपु न जांय कहीं । पल एक प्रिया विनु चैन नहीं ॥
दुषिया जननी मुष देषनको । पितु ग्राम सुआसिनि पेषनको ॥

सह बंधु गई चुपके सो सती । बरषासन ग्राम हते जु पती ॥
जब सांझ समय निज गेह गये । घर सून निहारि ससोच भये ॥
तब दासि जनायउ सौं करिकै । निज बंधु के संग गई मैकै ॥
सुनते उठि कै ससुरारि चले । अति प्रेम प्रगाढ़ विसेष पले ॥
कौनिउ विधि ते सरि पार किये । पहुँचे सब सोवत द्वार दिये ॥
छं०—दै द्वार सोवहिं लोग नींद तुराइ गोहरावन लगे ।
स्वर चीन्हि द्वार कपाट पोली झमकि भामिनि सगबगे ॥
बोली बिहंसि बानी बिमल उपदेस सानी कामिनी ।
कस बस चले प्रेमांध ज्यों नहिं सुधि अंधेरी जामिनी ॥ ३ ॥

दो०—हाड़ मांस को देह मम, तापर जितनी प्रीति ।
तिसु आधो जो रामप्रति, अवसि मिटिहि भवभीति ॥ १७ ॥

सो०—लाग बचन जिमि बान, तुरत फिरे बिरमें न छिन ।
सोचेउ निज कल्यान, तबचित चढ़ेउ जो गुरु कहेउ ॥ ५ ॥

दो०—नरहरि कंचन कामिनी, रहिये इनते दूर ।
जो चाहिय कल्यान निज, राम दरस भरपूर ॥ १८ ॥

उठि दौरि मनावन सार गयो । पिछुआये रह्यौ जब भोर भयो ॥
नहिं फेरे फिरे फिरि आयो घरे । भगिनी निज मूर्छित देख्यो परे ॥
मुर्छा जु हटी उठि बोली सती । पिय को उपदेसन आइ हती ॥
पिय मोर पयान कियो बन को । हौं प्रान पठाउं तजौं तनु को ॥
कहिकै अस सो निज देह तजी । सुरलोक गई पतिधर्मध्वजी ॥
सत पंद्रह जुक्त नवासि सरे । सुअसाढ़ बदी दसमीहुं परे ॥
बुध बासर धन्य सो धन्य घरी । उपदेसि सती तनु त्याग करी ॥

भयो भोर कहँ कोउ सिद्ध मुनी । परमारथविंदक तत्त्व गुनी ॥
द्विजगेह में सारद देह धरी । रति रंग रमा रस राग हरी ॥

दो०—कोउ कह तिय की मुपनि ते, बोल्येउ श्रीभगवान ।
मोह निवारेउ भगत कर, साहिब सीलनिधान ॥ १९ ॥

तुलसीसुत तीरथराज गये । अरु मंजि त्रिवेनि कृतार्थ भये ॥
गृहिवेप विसर्जन कीन्ह तहां । मुनिवेप संवारि चले फफहां ॥
गढ़ हेलि रु धेनुमती तमसा । पहुंचे रघुवीरपुरी सहसा ॥
तहवां चौमासक लौं बसिकै । प्रिय संत अनंत विभू रसिकै ॥
चले वेगि पुरी कंह धाम महा । विस्राम पचीसक बीच रहा ॥
तिनमां दुइ ठाम प्रधान गुनो । बरदान रु साप की बात सुनो ॥
घरि चारि दुबोलिमें बास किये । हरिराम कुमारहिं साप दिये ॥
सो प्रसिद्ध सुप्रेत भयो तेहिते । हरिदरसन आपु लह्यो जेहिते ॥
पुनि चारु कुंवरि वरदान दियो । जिन संत सुसेवा लियो रु कियो ॥

दो०—जगन्नाथ सुपधाम में, कछुक दिना करि बास ।
लिपे वाल्मीकी स्वकर, जब तब लहि अवकास ॥ २० ॥

रामेस्वर कंह कीन्ह पयाना । तंहते द्वारावति जग जाना ॥
बहुरि तहां ते चलि हरपाई । बदरी धामहिं पहुंचे जाई ॥
नारायन रिषि व्यास सोहाये । दरस दिये मानस गुन गाये ॥
तहं ते अति दुर्गम पथ लयऊ । मानसरोवर कंह चलि गयऊ ॥
जिय को लोभ तजै जो कोई । सो तंह जाइ कृतारथ होई ॥
तंह करि दिव्य संत सत्संगा । जाते होवै भवरस भंगा ॥
दिव्य सहाय पाय मुनिराई । जात रुपाचल देपे जाई ॥

नीलाचल कर दरसन कीन्हे । परम सुजान भुसुंडिहि चीन्हे ॥
लौटि सरोवर पै पुनि आये । गिरि कैलास प्रदच्छिन लाये ॥

दो०—इमि करि तीर्थाटन सफल, निवसे भवबन जाय ।
चौदह बरिस रु मास दस, सतरह दिवस बिताय ॥ २१ ॥

टिकिके तंह चातुरमास किये । नित रामकथा कहि हर्ष हिये ॥
बनवासि सुसंत सुनैं नित सो । सुनि होंहिं अनंदित ते चित सो ॥
बन मां इक पिप्पल रूप हतो । तिसु ऊपर प्रेत निवास छतो ॥
जल शौच गिरावहिं तासु तरे । सोइ पानिय प्रेत पियास हरे ॥
जब जानेउ सो कि अहै मुनि ये । जिन बालपने मोहि साप दिये ॥
तब एक दिना सो प्रतच्छ कह्यो । कहिये सो करौं जस भाव अह्यो ॥
तुलसीसुत बोलेउ मोरे मनां । रघुनंदन दरसन को चहना ॥
सुनि प्रेत कह्यो जु कथा सुनिबै । नित आवत अंजनिपूत अजै ॥
सबते प्रथमै सो तो आवहिं जू । सब लोगन पाछे सो जावहिं जू ॥

सो०—वेष अमंगल धारि, कुष्ठी को तनु जानि यहि ।
अवसर नीक बिचारि, चरन गहिय हठ ठानि यहि ॥ ६ ॥

छं०—हठ ठानि तेहि पहिचानि मुनिवर बिनय बहु बिधि भाषेऊ ।
पद गहि न छाड़ेउ पवनसुत कह कहहु जो अभिलाषेऊ ॥
रघुबीर दरसन मोहिं कराइय मुनि कहेउ गदगद बचन ।
तुम जाइ सेवहु चित्रकूट तहां दरस पैहहु चयन ॥ ४ ॥

दो०—श्रीहनुमंत प्रसंग यह, बिमल चरित बिस्तार ।
लहेउ गोसाईं दरस रस, बिदित सकल संसार ॥ २२ ॥

चित चेंति चले चितकूट चितय । मन माहिं मनोरथ को उपचय ॥
जब सोचहिं आपन मंद कृती । पग पाछ पड़ै जु रहै न धृती ॥
सुधि आवत राम स्वभाव जबै । तब धावत मारग आतुर ह्वै ॥
यहि भांति गोसाइं तहां पहुंचे । किय आसन राम सुघाटहि पै ॥
इक बार प्रदच्छिन देन गये । तंह देषत रूप अनूप भये ॥
जुग राजकुमार सु अस्व चढ़े । मृगया बन षेलन जात कढ़े ॥
छबि सो लषि कै मन मोहेउ पै । अस को तनुधारि न जानि सकै ॥
हनुमंत बतायउ भेद सबै । पछिताइ रहे ललचाइल ह्वै ॥
तब धीरज दीन्हेउ बायुतनय । पुनि होइहि दरसन प्रात समय ॥

दो०—सुषद अमावस मौनिया, बुध सोरह सै सात ।
जा बैठै तिसु घाट पै, बिरही होतहि प्रात ॥ २३ ॥

सो०—प्रगटे राम सुजान, कहेउ देहु बाबा मलय ।
सुक बपु धरि हनुमान, पढ़ेउ चेतावनि दोहरा ॥ ७ ॥

दो०—चित्रकूट के घाट पै, भइ संतन की भीर ।
तुलसिदास चंदन घिसैं, तिलक देत रघुबीर ॥ २४ ॥

छं०—रघुबीर छबि निरषन लगे बिसरी सबै सुधि देह की ।
को घिसै चंदन दृगन तैं बहि चली सरित सनेह की ॥
प्रभु कहेउ पुनि सो नाहिं चेतेउ स्वकर चंदन लै लिये ।
दै तिलक रुचिर ललाट पै निज रूप अंतरहित किये ॥ ५ ॥

दो०—बिरह ब्यथा तलफत पड़े, मगन ध्यान इकतार ।
रैन जगाये बायुसुत, दीन्हे दसा सुधार ॥ २५ ॥

सुक' पाठ पढ़ावत नारि नरा । करतल पर लै सुक को पिंजरा ॥
इलसीसुत भक्ति महा महिमा । ततकालहिं छाय रही महि मां ॥
दिन एक प्रदच्छिन कामद दै । पहुँचे सौमित्र पहाड़िहिं पै ॥
तंह खेतक सर्प पड़यो मग में । सित गात मनोहर या जग में ॥
तिसु ओर बिलोकि गोसाइं कहै । चंद्रोपम सुंदर नाग अहै ॥
हरि सृष्टि बिचित्र कहै न बनै । निगमागम सारद सेप भनै ॥
रिपि दृष्टि पड़ै तिसु पाप गयो । तब पन्नग ग्यानि ललात भयो ॥
मोहि छूइ कै तारिय नाथ अबै । छुअतेहि गयो सो भुजंग अबै ॥
योगश्रि मुनी तहं छींत भये । निज पूर्व कथा कहि बास लये ॥

दो०—यह प्रभाव मुनिनाथ कर, सुनि गुनि संत सुजान ।
आवन लागे दरस हित, भीर भयो रिपिथान ॥ २६ ॥

बड़ि भीर निहारि गुफा में ढुके । बहिरंतर हानि बिचारि लुके ॥
मुनि आवहिं जोगि तपी रु जती । बिनु दरसन जाहिं निरास अती ॥
दरियानंद स्वामिहुं आय रहे । निज आसन टेकि जमाय रहे ॥
लघुसंका के हेतु गोसाइं कढ़े । कर जोरि सो स्वामि भये जु ठढ़े ॥
कहे नाथ है होत अनीति बड़ी । छमिये कहिबो मम बात कड़ी ॥
लघुसंका लगे बहिरात हैं जू । सुनि साधु गिरा छिपि जात हैं जू ॥
दुप पावत सज्जन हैं तेहि ते । बिनती हौं करौं सुनिये यहि ते ॥
हौं देत मचान बंधाय अबै । तेहि ऊपर आसन नाथ फबै ॥
करि दरसन होव निहाल सबै । सुठि संत समागम होइ जबै ॥

दो०—बिनती दरियानंद की, मानि सजाय मचान ।
बैठत दिन भर लहत सुप, साधक सिद्ध सुजान ॥ २७ ॥

नित नव सत्संग उमाह बढ़ै। सुचि संत हृदय रसरंग चढ़ै॥
नित नित्य बिहारहुं देषत हैं। मृगया कर कौतुक पेषत हैं॥
वृंदावन ते हरिवंस हितू। प्रियदास नवल निज सिष्य भृतू॥
पठये तिन आइ जोहार किये। गुरुदत्त सुपोथि सप्रेम दिये॥
जमुनाष्टक राधासुधानिधि जू। अरु राधिकातंत्र महा विधि जू॥
अरु पाति दई हितहाथ लिपी। सोरह सै नव जन्माष्टमि कीं॥
तेहि माहिं लिषी बिनती बहुरी। सोइ बात सुपागर सो कहुरी॥
रजनी महरास की आवत जू। चित मोर सदय ललचावत जू॥
रसिकै रस मों तनुत्याग चहौं। मोहि आसिप देइय कुंज लहौं॥

सो०—सुनि बिनती मुनिनाथ, एवमस्तु इति भाषेउ।
तनु तजि भये सनाथ, नित्य निकुंज प्रवेस करि॥ ८ ॥

दो०—संडीला ते आय कै, बसु स्वामी नंदलाल।
पढ़े रामरच्छा विवृति, जो भक्तन को ढाल॥ २८॥

षट मास रहे सतसंग लहै। चलती बिरियां कछु चिह्न चहै॥
दियो सालग्राम को मूर्ति भली। निज हस्त लिपित कवच औ कमली॥
इमि जादव माधव बेनि उभय। चितसुप करुनेस अनंद सदय॥
तपसी सुमुरारि उधार जती। बिरही भगवंत सभागवती॥
बिभवानंद देव दिनेस मिले। अरु दच्छिन देस के स्वामि पिले॥
सब रंग रंगे सतसंग पगे। अहमादि कुनींद सुषुप्त जगे॥
कहे धन्य गोसाइं जु जन्म लये। लहि दरसन हौं कृतकृत्य भये॥
दग नीर ढरै नहिं बोल सरै। सब जाहिं सप्रेम प्रमोद भरै॥
वसु संवत साधु समागम मों। कटिगो नहिं जानि परयो किमि धों

दो०—सोरह सै सोरह लगै, कामद गिरि ढिग वास।
सुचि एकांत प्रदेस महं, आये सूर सुदास ॥ २९ ॥
पठये गोकुलनाथ जी, कृष्ण रंग में बोरि।
दृग फेरत चित चातुरी, लीन्ह गोसाइं छोरि ॥ ३० ॥

कवि सूर दिपायउ सागर को। सुचि प्रेम कथा नट नागर को॥
पद द्वय पुनि गाय सुनाय रहे। पदपंकज पै सिर नाय कहे॥
अस आसिष देइय स्याम ढरैं। यहि कीरति मोरि दिगंत चरैं॥
सुनि कोमल बैन सुदादि दिये। पद पोथि उठाय लगाये हिये॥
कहे स्याम सदा रस चापत हैं। रुचि सेवक की हरि रापत हैं॥
तनिको नहिं संसय है यहि मां। स्रुति सेष बपानत हैं महिमा॥
दिन सात रहे सतसंग पगे। पदकंज गहे जब जान लगे॥
गहि बांह गोसाइं प्रबोध किये। पुनि गोकुलनाथ को पत्र दिये॥
लै पाति गये जब सूर कबी। उर में पधराय के स्याम छबी॥

दो०—तब आयो मेवाड़ ते, बिप्र नाम सुखपाल।
मीरा बाई पत्रिका, लायो प्रेम प्रबाल ॥ ३१ ॥
पढ़ि पाती उत्तर लिये, गीत कवित्त बनाय।
सब तजि हरि भजिबो भलो, कहि दिय बिप्र पठाय ॥ ३२ ॥

तड़के इक बालक आन लग्यो। सुठि सुंदर कंठ सों गान लग्यो॥
तिसु गान पैं रीझि गोसाइं गये। लिपि दीन्ह तबै पद चारि नये॥
करि कंठ सुनायउ दूजे दिना। अड़ि जाय सो नूतन गान बिना॥
मिसु याहि बनावन गीत लगे। उर भीतर सुंदर भाव जगे॥
जब सोरह सैं वसु बीस चढ्यो। पद जोरि नवैं सुचि ग्रंथ गढ्यो॥

तेहि रामगीतावलि नाम धरयो । अरु कृष्णगीतावलि राँचि सरयो ॥
दोउ ग्रंथ सुधारि लिपै रुचि सों । हनुमंतहिं दीन्ह सुनाय जिसों ॥
तब मारुति ह्वै कै प्रसन्न कह्यो । करि प्यान अवधपुर जाइ रह्यो ॥
इमि इष्ट को आयसु पाइ चले । बिरमे सुठि तीरथराज थले ॥

दो०—तेहि अवसर उत्तम परब, लगो मकर नहान ।
जोगी तपी जती सती, जुरे सयान अजान ॥ ३३ ॥

तेहि पर्व ते पाछे गये दिन छै । बट छांह तरे जु लप्यो मुनि द्वै ॥
तपपुंज दोऊ मुप कांति तपै । छवि छाम छपाकर छंद छपै ॥
करि दंडप्रनाम सुदूरहिं ते । करजोरि कै ठाढ़ भये तहिं ते ॥
मुनि सैन सों एक हंकारि लियो । अपने ढिग आसन चारु दियो ॥
तेहि टारि कै भूमि में बैठि गये । परिचय निज दै परिचाय लये ॥
सोइ रामकथा तंह होत रह्यो । गुरु सूकरषेत में जौन कह्यो ॥
बिसमयजुत बूझेउ गुप्त मता । कहि जागबलिक मुनि दीन्ह बता ॥
हर रंचि भवानिहिं दीन्ह सोई । पुनि दीन्ह भुसुंडिहिं तत्त गोई ॥
हौं जाइ भुसुंडि ते ताहि लहेउं । भरद्वाज मुनी प्रति आइ कहेउं ॥

दो०—यहि बिधि मुनि परितोष लहि, पद गहि पाय प्रसाद ।
सुनै जुगल मुनिवर्ज कर, तहां विमल संवाद ॥ ३४ ॥

तेहि ठांव गये जब दूजे दिना । थल सून निहारु मुनीस बिना ॥
बट छांह न सो नहिं पर्नकुटी । मन बिसमय बाढ़ेउ मर्म पुटी ॥
उर राषि उभय मुनि सील चले । हरि प्रेरित कासि की ओर ढले ॥
कछु दूरि गये सुधि आइ जबै । मन सोचत का करिये जु अबै ॥
जो भयो सो भयो अब याहि सधै । हर दरसन कै चलिहौं अवधै ॥

मंन ठीक किये मग आगु बढ़े । चलि कै पुनि सुरसरि तीर कढ़े ॥
तंत्र तीरहि तीर चले चित दै । भइ सांझ जहां सो तहां टिकिगे ॥
ढिग वारि पुरा बिच सीतामढ़ी । तंह आसन डारत वृत्ति चढ़ी ॥
नहिं भूप न नींद बिछिप्त दसा । उर पूरब जनम प्रसंग बसा ॥

दो०—सीताबटतर तीन दिन, बसि सुकबित्त बनाय ।
बंदि छोड़ावत बिध नृप, पहुंचे कासी जाय ॥ ३५ ॥

भगत सिरोमनि घाट पै, बिप्रगेह करि बास ।
राम बिमल जस कहि चले, उपज्यो हृदय हुलास ॥ ३६ ॥

दिन मां जितनी रचना रचते । निसि मांहि सुसंचित ना बचते ॥
यह लोपक्रिया प्रति घौस सरै । करिये सो कहा नहिं बूझि परै ॥
अठवें दिन संभु दिये सपना । निज बोलि में काव्य करो अपना ॥
उचटी निंदिया उठि बैठु मुनी । उर गूंजि रह्यो सपने की धुनी ॥
प्रगटे सिव संग भवानि लिये । मुनि आठहु अंग प्रणाम किये ॥
सिव भाषेउ भाषा में काव्य रचो । सुरबानि के पीछे न तात पचो ॥
सब कर हित होइ सोई करिये । अरु पूर्ब प्रथा मत आचरिये ॥
तुम जाइ अवधपुर बास करो । तंहई निज काव्य प्रकास करो ॥
मम पुन्य प्रसाद सों काव्यकला । होइहै सम साम रिचा सफला ॥

सो०—कहि अस संभु भवानि, अंतरधान भये तुरत ।
आपन भाग्य बखानि, चले गोसाई अवधपुर ॥ ९ ॥

दो०—जेहि दिन साहि सभान में, उदय लग्यो सनगान ।
तेहि दिन पहुंचे अवध में, श्रीगोसाइं भगवान ॥ ३७ ॥

सरजू करि मज्जन गव दिन में । विचरे पुलि नारन बीथिन में ॥
एक संत मिले कहने सो लगे । थल रम्य लपैं महबीरी लगे ॥
लै संग सो ठाम दिपायो भले । बट की बिटपावलि पुन्य थले ॥
तिन मां बट एक बिसाल थही । तिसु मूल में वेदिका सोहि रही ॥
तिसु ऊपर बैठु सिधासन से । एक सिद्ध प्रसिद्ध हुतासन से ॥
थल देषि लोभायो गोसाइं मना । बसिये यहि ठांव कुटीर बना ॥
जब सिद्ध के सन्निधि मों गुदरे । तजि आसन सो जय जय उचरे ॥
सो कह्यो गुरु मोर निदेस दियो । तेहि कारन हौं यह बास लियो ॥
गुरु मोर बतायउ मरम सबै । सो तो देपत हौं परतच्छ अबै ॥

कु०—मम गुरु कहेउ कि करहि किन सिद्ध पृष्ठ थल बास ।
कछु दिन बीते कहहिंगे हरिजस तुलसीदास ॥
हरिजस तुलसीदास कहहिंगे यहि थल आई ।
आदि कबी अवतार बायुनंदन बल पाई ॥
राजराज बट रोपि दियो मरजाद समुत्तम ।
बसि यहं ठाहर ठाटु मानि अति हित सासन मम ॥ ९ ॥

सो०—जब ऐहैं यहि ठाम, हुलसीसुत तिसु हेतु हित ।
सौंपि कुटी आराम, तन तजि ऐहहु मम निकट ॥ १० ॥

उपदेस गुरू मोहि नीक लग्यो । बहु जनम पुरातन पुन्य जग्यो ॥
बसिकैं रसिकै तपिकै चौरी । हौं जोहत बाट रहेउं रौरी ॥
अब राजिय गाजिय नाथ यहां । हौं जाब बसे गुरु मोर जहां ॥
कहिके अस बेदिका ते उतरयो । सिर नाइ सिधारेउ दूरि परयो ॥
तंह आसन मारिकै ध्यान धरयो । तिसु जोग हुतासन गात जरयो ॥

यह कौतुक देपि गोसाइं कहै। धनुधारि ! तेरी बलिहारि अहै ॥
निवसे तंह सौष्य सुपास लहे। दृढ़ संजम जो मम जोग गहे ॥
पय पान करैं सोउ एक समय। रघुबीर भरोस न काहुक भय ॥
जुग बत्सर बीत न बृत्ति डगो। इकतीस को संबत आई लगो ॥

दो०—रामजन्म तिथि बार सब, जस त्रेता मंह भास।
तस इकतीसा महं जुरो, जोग लग्न ग्रह रास ॥ ३८ ॥
नवमी मंगलवार सुभ, प्रात समय हनुमान।
प्रगटि प्रथम अभिषेक किय, करन जगत कल्यान ॥ ३९ ॥
हर, गौरी, गनपति, गिरा, नारद, सेष सुजान।
मंगलमय आसिष दिये, रवि, कवि, गुरु गिरबान ॥ ४० ॥

सो०—यहि विधि भा आरंभ, रामचरितमानस बिमल।
सुनत मिटत मद दंभ, कामादिक संसय सकल ॥ ४१ ॥

दुइ बत्सर साते क मास परे। दिन छब्बिस मांझ सो पूर करे ॥
तैंतीस को संबत औ मगसर। सुभ धौस सुराम बिवाहहि पर ॥
सुठि सप्त जहाज तयार भयो। भवसागर पार उतारन को ॥
पाषंड प्रपंच बहावन को। सुचि सात्विक धर्मचलावन को ॥
कलि पाप कलाप नसावन को। हरि भगति छटा दरसावन को ॥
मत वाद बिबाद मिटावन को। अरु प्रेम को पाठ पढ़ावन को ॥
संतन चित चाव चढ़ावन को। सज्जन उर मोद बढ़ावन को ॥
हरिरस हर बस समुझावन को। सुनि संमत मार्ग सुझावन को ॥
जुत सप्त सोपान समाप्त भयो। सदग्रंथ बन्यो सुभवन्न नयो ॥

दो०—महिसुत बासर मध्य दिन, सुभ मिति तत्सत कूल ।
सुर समूह जय जय किये, हरषित बरपे फूल ॥ ४१ ॥
जेहि छिन यह आरंभ भो, तेहि छिन पूरेउ पूर ।
निरबल मानव लेषनी, पींचि लियो अति दूर ॥ ४२ ॥
पांच पात गनपति लिये, दिव्य लेपनी चाल ।
सत, सिव, नाग, अरु द्यू, दिसप, लोक गये ततकाल ॥ ४३ ॥
सबके मानस में बसेउ, मानस रामचरित्र ।
बंदन रिपि कवि पद कमल, मन क्रम बचन पवित्र ॥ ४४ ॥
बंदों तुलसी के चरन, जिन कीन्हों जग काज ।
कलि समुद्र बूड़त लष्यो, प्रगटेउ सत्त जहाज ॥ ४५ ॥
परम मधुर पावन करनि, चार पदारथ दानि ।
तुलसीकृत रघुपति कथा, कै सुरसरि रसपानि ॥ ४६ ॥

सो०—प्रगटे श्री हनुमान, अथ सों इति लौं सब सुनै ।
दिये सुभग बरदान, कीरति त्रिभुवन बस करी ॥ १२ ॥

मिथिला के सुसंत सुजान हते । मिथिलाधिप भाव पगे रहते ॥
सुचि नाम रुपारुन स्वामि जुतो । तेहि अवसर औध में आयो हुतो ॥
प्रथमै यह मानस तेई सुनै । तिनहीं अधिकारि गोसाइं गुनै ॥
स्वामि नंद सुलाल को सिष्य पुनी । तिसु नाम दलाल सुदास गुनी ॥
लिषि कै सोइ पोथि स्वठाम गयो । गुरु के ढिग जाय सुनाय दयो ॥
जमुना तट पै त्रय बत्सर लों । रसपानहिं जाइ सुनावत भो ॥
तब ते बहु संख्यक पात लिषे । कछु लोगन औ निज हाथ रिषे ॥

सुकुतामनि दास जु आयो हतो । हरि सयन को गीत सुनायो हतो ॥
तिसु भावहि पै मुनि रीझि गये । पल मों पल भाँजत सिद्धि दये ॥

दो०—तब हरि अनुसासन लहे, पहुंचे कासी जाय ।
विश्वनाथ जगदंब प्रति, पोथी दियो सुनाय ॥ ४७ ॥

छं०—पोथी पाठ समाप्त कै के धरे, सिवलिंग ढिग रात में ।
मूरप पंडित सिद्ध तापस जुरे, जब पट पुलेउ प्रात में ॥
देपिन तिरपित दृष्टि ते सब जने, कीन्ही सही संकरं ।
दिव्यापर सों लिप्यो पढ़े धुनि सुने, सत्यं सिवं सुंदरं ॥ ६ ॥

शिव की नगरी रस रंग भरी । यह लीला जु पाटि गई सगरी ॥
हरपे नर नारि जोहारि किये । जय जय धुनि बोलि बलैयां लिये ॥
पै पंडित लोगन सोच भयो । सब मान महातम जीव गयो ॥
पढ़िहैं यह पोथि प्रसादमई । तब पूछिहैं कौन हमें मनई ॥
दल बांधि ते निंदत बागत भे । सुर बानि सराहत पागत भे ॥
कोउ ग्रंथ चोरावन हेतु रचे । फरफंद अनेक प्रपंच पचे ॥
निधुआ सिपुआ जुग चोर गये । रपवार बिलोकि निहाल भये ॥
तेहि पूछे गोसाइं ते कौन धुहां । जुग स्यामल गौर धरे धनुहीं ॥
सुनि बैन भरैं जल नैन कहै । तुम धन्य हते हरि दरस लहै ॥

दो०—तजि कुकरम तसकर तरे, दिय सब बस्तु लुटाय ।
जाइ धरे टोडर सदन, पोथी जतन कराय ॥ ४८ ॥

पुनि दूसर पात लिप्यो रुचि सों । नहिं ते लिपि पै लिपि होन लग्यो ॥
दिन दून प्रचार बढ़ेव लपि कै । सब पंडित हारे हिया झपि कै ॥

तब मिस्र बटेसर तांत्रिक ही । दुप दाह सुधीगन रोय कही ॥
तिन मारन केर प्रयोग कियो । हठि भैरव प्रेरि पठाय दियो ॥
हनुमंत से रच्छक देपि डरे । उलटे सुबटेसर प्रान हरे ॥
तब हारि चले दल को सजि कै । मधुसूदन सरस्वति के मठ पै ॥
कहै कीन्ह प्रमान महेस सही । किसु कोटि को है सो नहिं बात कही
स्रुति सास्त्र पुरान इतिहास इये । केहिके समकच्छ तिसै कहिये ॥
जति राज कहे मंगवाउब जू । तब पोथि त्रिलोकि बताउब जू ॥

दो०—जति मंगाय पोथी पढ़े, उपज्यो परमानंद ।
फेरि दिये लिपि श्लोक यह, जयति सच्चिदानंद ॥ ४९ ॥

श्लोक—आनन्दकानने ह्यस्मिन् जङ्गमस्तुलसीतरुः ।
कवितामञ्जरी भाति रामभ्रमरभूषिता ॥ १ ॥

जब पंडित आये कहे तिन ते । किन पूछिय बात सदासिवसे ॥
निगमागम सास्त्र पुरान सबै । क्रम ते धरि मानस नीचे फबै ॥
जब होत बिहान षुलेउ पट तो । सब टूटि परे तेहि देपन को ॥
लपि वेद के ऊपर मानसही । सब पंडित लाज गरे तितही ॥
चरनों पै पड़े चरनोदक लै । अपराध कराइ छमा घर गै ॥
नदिया को सुपंडित दत्त रबी । सब सास्त्रविसारद आसु कबी ॥
सुनि ते हठि बाद विबाद कियो । अरु हारि बिषाद बढ़ायो हियो ॥
जब न्हान गोसाइं गये मठ ते । तब मारन हेतु गयो लठ लै ॥
हनुमंत सुरच्छक देखि भज्यो । अपनी करनी पर आपु लज्यो ॥
पुनि जाइ गोसाइं रिझाय लियो । वर हेतु सुषी हठ भूरि कियो ॥

छं०—माँगेउ सो वर तजिये पुरी मुनि बिबस भे बर के दिये ।
'कासिनाथ कहि निवरत हौं' कवित्त बनाय दृढ़ निस्चय किये ॥
सो लिपि धरे हर मंदिरहिं प्रस्थान दच्छिन दिसि किये ।
सिव दै दरस समुझाइ फेरे छुभित मन धीरज दिये ॥ ७ ॥

दो०—सुनि प्रस्थान मुदित भयो, गयो दरस हित धीर ।
बंद भयो पट धुनि भई, कोपसहित गंभीर ॥ ५० ॥

सो०—जाइ गोसाइं मनाउ, पग परि बहु बिधि बिनय करि ।
पुरि महं लाइ बसाउ, ना तो होइहि नास तव ॥ १२ ॥

सुनि टोडर आय कियो बिनती । मुनि मानिय सेवक की मिनती ॥
प्रिय घाट असी पर भौन नयो । बनिकै सह घाट तयार भयो ॥
बसिकै सुप सों सुप देइय जू । पदकंज सदा हम सेइय जू ॥
सुप मानि गये तेहि ठाम बसे । रघुबीर गुनाबलि माहिं रसे ॥
कलि आयउ राति कृपान लिये । मुनि कहं बहुभांति सों त्रास दिये ॥
सो कहेउ जल बोरहु पोथि निजै । न तो दाढ़िहौं ताड़िहौं चेतु अबै ॥
कहिके अस सो जु सिधारो जबै । मुनि ध्यान धरेउ हरि हेतु तबै ॥
हनुमंत कह्यो कलि ना मनिहै । मोहि बरजत बैर महा ठनिहै ॥
लिखिकै बिनयावलि देहु मोही । तब दंड दियाउब तात ओही ॥

दो०—बिदित राम बिनयावली, मुनि तब निरमित कीन्ह ।
सुनि तेहि साषी श्रुत प्रभू, मुनिहिं अभय कर दीन्ह ॥ ५१ ॥

मिथिलापुर हेतु पयान किये । सुकृती जन को सुप सांति दिये ॥
भृगु आसम में दिन चारि रहे । करदीन दुआ कर पाप दहे ॥

दिन एक बसे मुनि हंसपुरा। परसी को सुहाग दिये बहुरा॥
गउघांट में राउ गंभीर घरे। दुइ बासर लौं तंहवां ठहरे॥
ब्रह्मेस सुदरसन कैके चले। पुनि कांत ब्रह्मपुर मां निकले॥
संवरू सुत मांगरु ग्वाल हतो। दुहि दूध दियो सुर साधु रतो॥
बर दीन्ह तजे चोरहाई सहूं। निरबंस न होवहुगे कबहूं॥
तब बेलपतार में आय रहे। तहं दास धनी निज कष्ट कहे॥

छं०—कहे कष्ट आपन कालिह जाइहि प्रान मम पातक बयों।
मूसहिं षवायों भोग कहि कहि षात हरि सौंहैं कियों॥
रघुनाथसिंह जानेउ दगा करि कोप सो बोलेउ मुने।
नहिं षाहिं ठाकुर सामुहे मम तोपि बध निस्चय गुने॥ ८॥

सो०—मुनिबर धीरज दीन्ह, कियो रसोई साधु तब।
सन्मुख भोजन कीन्ह, ठाकुर लषि रिषि इमि कहेउ॥ १४॥

दो०—तुलसी झूठे भगत को, पति राखत भगवान।
जिमि मूरष उपरोहितहिं, देत दान जजमान॥ ५२॥

निज गेह पवित्र करावन को। लै गो मुनि को बर नायक सो॥
तहँ भक्त सुगोबिंद मिस्र मिले। जिसु दृष्टि ते लोह घना पिघिले॥
मुनि गांव के नांव में फेर करे। रघुनाथपुरा तिसु नाम धरे॥
तंह ते चलिकै बिचरे बिचरे। रिषि हरिहर खेतमें जा पधरे॥
पुनि संगम मंजि चले सपदी। नियराये बिदेहपुरी छपदी॥
धरि बालिका रूप बिदेह लली। बहराय कै षीर षवाय चली॥
जब जानेउ मरम कहा कहिये। मन ही मन सोचि कृपा रहिये॥

द्विज लोगन हाला के घेरि रहे। अरु आपन घोर बिपत्ति कहे॥
छत सूबा नवाब बड़ो रगरी। सो तो बारहो गांव की वृत्ति हरी॥

दो०—दया लागि कर्त्तव्य गुनि, सुमिरे बायुकुमार।
दंडित करि बहुरायउ, सुपजुत द्विज परिवार॥ ५३॥
मिथिला ते कासी गये चालिस संवत लाग।
दोहावलि संग्रह किये, सहित बिमल अनुराग॥ ५४॥
लिपे बालमीकी बहुरि, इकतालिस के मांहि।
मगसर सुदि सतिमी रचौ, पाठ करन हित ताहि॥ ५५॥
माधव सित सिय जनम तिथि, व्यालिस संवत बीच।
सतसैया बरनै लगे, प्रेम बारि ते सींच॥ ५६॥

सो०—उतरु सनीचरि मीन, मरी परी कासीपुरी।
लोगन है अति दीन, जाइ पुकारे रिपि निकट॥ १५॥
लागिय नाथ गोहार अपर बल कछु न बिसाता।
रापैं हरिके दास कि सिरजनहार बिधाता॥

दो०—करुनामय मुनि सुनि बिथा, तंत्र कबित्त बनाय।
करुनानिधि सों बिनय करि, दीन्ही मरी भगाय॥ ५७॥

कबि केसवदास बड़े रसिया। घनस्याम सुकुल नभ के बसिया॥
कबि जानि के दरसन हेतु गये। रहि बाहिर सूचन भेजि दिये॥
सुनिकै जु गोसाइं कहे इतनो। कबि प्राकृत केसव आवन दो॥
फिरिगे झट केसव सो सुनिकै। निज तुच्छता आपुइ ते गुनिकै॥
जब सेवक टेरेउ गे कहिकै। हौं भेंटिहौं काल्हि बिनय गहिकै॥

घनस्याम रहै घासिराम रहै । वलभद्र रहै बिस्राम लहै ॥
रचि राम सुचंद्रिका रातिहि में । जुरै केसव जू असि घाटिहि में ॥
सतसंग जमी रस रंग मची । दोउ प्राकृत दिव्य बिभूति पची ॥
मिटि केसव को संकोच गयो । उर भीतर प्रीति की रीति रयो ॥

दो०—आदिल साही राजके, भाजक दान बनेत ।
दत्तात्रेय सुबिप्रवर, आये रिषय निकेत ॥ ५८ ॥
करि पूजा आसिष लहै, मांगे पुन्य प्रसाद ।
लिषित वालमीकी खकर, दिये सहित अहलाद ॥ ५९ ॥
अमरनाथ जोगी तिया, हरि बैरागी लीन ।
ताते कोपि तिनहिं रहित, कंठी माला कीन ॥ ६० ॥
मच्यो कोलाहल साधु सब, आये मुनिबर पास ।
फेरि मिल्यो सो आसननि, रिपय कृपा अनयास ॥ ६१ ॥
आयो सिद्ध अघोरिया, अलख जगावत द्वार ।
छिन महँ सिद्धाई हरी, उपदेसेउ स्रुति सार ॥ ६२ ॥

निमिषार को बिप्र सुधर्मरता । बनषंडि सुनाम बिमोह गता ॥
सब तीरथ लुसहिं चाहु थपै । तिसु हेतु सदासिव मंत्र जपै ॥
इक प्रेत घना ढिग ठाढ़ भयो । बहु द्रव्य गड़ो सो दिषाई दयो ॥
सो कह्यो धन लै सुभ काज सरो । यहि जोनि ते मोर उधार करो ॥
मन हरषित बिप्र कह्यो मोहि कां । चौधाम घुमायं सुतीरथ मां ॥
तब कासि गुसाइं के तीर चलो । तिस दरसन होय तुम्हारो भलो ॥
सुष मानि कै तै सोइ प्रेत कियो । नभ मांहि असी पर छेक छियो ॥

जन सोर मच्यो बहु लोग जुरे । सब कौतुक देषहिं अंग फुरे ॥
निज आस्रम ते कढ़ि आयो मुनी । नभ ते भयो जयजयकार धुनी ॥

दो०—दिव्य रूप धरि जान चढ़ि, प्रेत गयो हरिधाम ।
तुलसी दरस प्रताप ते, (` . भयो विधि वाम ॥ ६३ ॥
बनपंडी महि पर गिरेउ, पग छुइ कियो प्रनाम ।
मुनि सन सब ब्यवरा कह्यो, बसेउ रसेउ तेहि ठाम ॥ ६४ ॥
तासु विनय बस मुनि चले, तीरथ थापन काज ।
पहुंचे अवधहिं पांच दिन, तहां टिके रिषिराज ॥ ६५ ॥

दै रामगीतावलि गायक को । जे गावहिं जस रघुनायक को ॥
मन बोध तिवारिहिं औध छटा । सब कंचन मय बन भूमि अटा ॥
देपरा के चले गैनाही टिके । पुनि सूकरषेत में जाय थिके ॥
सियावार सुगांव में बास लिये । तंह सीता सुकूप को पाथ पिये ॥
पहुंचे लखनैपुर मोद भरे । अरु धेनुमती तट पै उतरे ॥
कहुं दीनन को प्रतिपाल करैं । कहुं साधुन के मन मोद भरैं ॥
कहुं लखनलाल को चरित बचैं । कहुं प्रेम मगन है आपु नचैं ॥
कहुं रामायन कल गान सचैं । उत्साह कोलाहल भूरि मचैं ॥
कहुं आरत जन को ताप हरैं । कहुं अग्यानिन उर ग्यान धरैं ॥

दो०—निरधन भाट दमोदरहिं, आसिष दै कवि कीन ।
लहेउ बिपुल धन मान बहु, भा कविकला प्रवीन ॥ ६६ ॥
तहँ ते मलिहाबाद में, आय संत सिरताज ।
रामायन निज कृत दिये, ब्रजवल्लभ भटराज ॥ ६७ ॥

पुनि अनन्य माधव मिले, कोटरा ग्रामहिं जाय।
माता प्रति सिच्छा सुने, भगति दिये बतलाय ॥ ६८ ॥

पुनि जाय बिठूर में रैनि बसे। सरि मज्जत पांक में जाइ धसे ॥
गहि बांह निकारेउ जन्हुसुता। तन तायो जरा न रही जुबुता ॥
तंह ते चलि जाय संडीले परे। गौरीसंकर गृह माथ धरे ॥
कहे या घर में ली है जनम पपा। मनसूपा स्वयं श्रीकृष्न सपा ॥
कछु काल गये सोइ जन्म धर्यो। बंसीधर ताकर नाम पर्यो ॥
कबि भो मुनिवर उपदेस कियो। पद रास सुने तनु त्याग दियो ॥
तेहि व्योम बिमान पै जात लख्यो। हलवाई सुप्रसिद्ध प्रवीन भष्यो ॥
सतसंगिन देपि निहाल भये। उपदेस सनातन पूर लये ॥

दो०—संडीले ते मुनि चले, मग ठाकुर छितिपाल।
नमन कियो नहिं मद मतो, तुरत भयो कंगाल ॥ ६९ ।

सो०—बिप्रन किय अपमान, ताते ते निरधन भये।
कैथन किय सनमान, सुषी भये धन वंस लहि ॥ १६ ॥

दो०—जुरै जुलाहे भेंट धरि, लहै बिपुल धन धान्य।
पहुंचे नैमिष बन मुनी, सर्व तंत्र सनमान्य ॥ ७० ॥
सोधि सकल तीरथ थपे, किय त्रय मास निवास।
मिले पिहानी के सुकुल, संवत लगु उनचास ॥ ७१ ॥

बैराबाद को सिद्ध प्रबीन घरे। मुनि आपुइ जोग ते जाइ परे ॥
करि ताहि निहाल चले मिसरिष। संग में बनखंडि दुचारिक सिष ॥
पुनि नाव चढ़े सुख सों बिचरे। पुर राम सुनै तुरतै उतरे ॥

नृप सेवक टंटा बेसाहि रहे । सब माल मता तजि राह गहे ॥
सिहराम सुनो पग दौरि गह्यो । करिके सु बिनयपद टेकि रह्यो ॥
तब लौटि परे तिसु धाम बसे । हनुमंतहिं थापि तहां बिलसे ॥
बंसीबन नाम धरयो बटरय । मगसर सुदि पंचमी रास रचय ॥
बृंदाबन में तंह ते जु गये । सुठि राम सुघाट पें बास लये ॥
बड़ धूम मचो सुचि संत घुरे । मुनि दरसन को नर नारि जुरे ॥

दो०—स्वामी नाभा ढिग गये, ते किय बहु सनमान ।
उच्चासन पधराइ मुनि, पूजे सहित बिधान ॥ ७२ ॥
बिप्र संत नाभा सहित, हरि दरसन के हेत ।
गये गोसाई मुदित मन, मोहन मदन निकेत ॥ ७३ ॥
राम उपासक जानि प्रभु, तुरत धरे धनुबान ।
दरसन दिये सनाथ किय, भगत बच्छल भगवान ॥ ७४ ॥

बरसाने में लीला सो व्यापि गई । मुनि आसन पें बड़ि भीर भई ॥
कछु कृष्न उपासक द्वेष भरे । धनुबान धरे पर मोह सरे ॥
तिनको समुझाये सुतत्त्व महा । जन को प्रन राम न राख्यो कहां ॥
सुभ दच्छिन देस ते जात हतो । हरि मूरति अवधहिं थापन को ॥
बिस्राम भयो जमुनातट पें । लखि मूरति मोहे बिप्र उदय ॥
सो चहो हरि विग्रह बाई थपें । बिनती किय जाइ गोसाइहिं पें ॥
न उठाये उठे जब सो प्रतिमा । तब थापित कीन्ह तहीं जिजिमां ॥
तिसु नाम कौसल्यानंदन जू । मुनिराज धरें जग बंदन जू ॥
नंददास कनौजिया प्रेम मढ़े । जिन सेष सनातन तीर पढ़े ॥
सिच्छा गुरु बंधु भये तेहिते । अति प्रेम सों आय मिले गहि ते ॥

दो०—हित सुत गोपीनाथ प्रति, महिमा अवध वषानि।
जेहि नहिं ठांव ठिकान कहुं, तिनहिं वसावत आनि ॥ ७५ ॥
फेरि अमनिया दिये पुनि, सपरा ताहि वताय।
हलवाई वनिकन सदन, वालकृष्न दिपराय ॥ ७६ ॥

सो०—इमि लीला दरसाय, भगतन उर आनंद भरि।
चित्रकूट मंह जाय, किये कछुक दिन वास तहं ॥१७॥

सतकाम सुविप्र गोसाइं लगे। दीच्छाहित आयो सुवृत्ति जगे॥
लषि कामविकार न सिष्य किये। टिकिगो तंह सो हठ ठानि हिये॥
जव राति में रानि कदंव लता। आइ तासु विलोकन सुंदरता॥
तिन दीपक वाति वढ़ाइ लियो। लषिकै मुनि सुंदर सीष दियो॥
सो विप्र लजाइ कै पाँय परयो। करिकै मुनि छोह विकार हरयो॥
पुनि विप्र दरिद्र महा जळपा। मंदाकिनि डूवन हेतु चला॥
तिसु प्रान वचावन हेतु रिषय। सुठि दारिद मोच सिला प्रगटय॥
पुनि साहि पवास पठायउ जू। मुनिराजहिं दिल्ली वुलायउ जू॥

दो०—चले जमुन तट नृप तिलक, साधु कियो सरनाम।
राधावल्लभ भगति दिय, रीझे स्यामा स्याम ॥ ७७ ॥

सो०—उड़छै केसवदास, प्रेत हतौ घेरेउ मुनिहिं।
उधरं विनहि प्रयास, चढ़ि विमान सरगहि गयो ॥ १८ ॥

चरवारि के ठाकुर की दुहिता। जिसु सुंदरता पै जग मुहिता॥
इक नारिहिं ते तिसु व्याह भयो। जव जानेउ दारुन दाह भयो॥
वर की जननी जनमावत ही। सो प्रसिद्ध कियो तेहि पुत्र कही॥

अनुकूलहिं साज समान कियो। जे जानत भे तिहि पूजि दियो ॥
यहि कारन धीरा भयो बहुतै। अब रोवत मींजत हाथ सबै ॥
तिन बेरे दया लगि संत हिये। तिसु हेतु नवाह्निक पाठ किये ॥
बिस्रांम लगायो सो जानिय जू। तिसु सब्द प्रथम यह आनिय जू ॥
हिय, सत, अरु कीन्हरु स्याम लगा। औ राम सैल पुनि हारि परा ॥
कह मारुतसुत, जहं तहं पुन्यं। इति पाठ नवाह्निक ठाम अयं ॥

दो०—नारी ते नर होइ गयो, करतहि पाठ बिराम।
पुलकित जय तुलसी कहै, जय जय सीताराम ॥ ७८ ॥

तंह ते पंचयें दिन मुनी, पहुंचे दिल्ली जाय।
पबरि पाय तुरतहिं नृपति, लिय दरबार बुलाय ॥ ७९ ॥

दिल्लीपति बिनती करी, दियरावहु करमात।
मुकरि गये बंदी किये, कीन्हे कपि उतपात ॥ ८० ॥

बेगम को पट फारेऊ, नगन भई सब बाम।
हाहाकार मच्यो महल, पटको नृपहिं धड़ाम ॥ ८१ ॥

मुनिहि मुकुत ततछन किये, छमाऽपराध कराय।
बिदा कीन्ह सनमान जुत, पीनस पें पधराय ॥ ८२ ॥

चलि दिल्ली ते आये महाबन में। निसि बास किये जु अहीरन में ॥
इक ग्वार भगीरथ पें ढुरिगे। तेहि सिद्ध सुसंत बनावन भे ॥
दसयें दिन औधहिं आय रहे। भरि पाय तहां सुरनाय गहे ॥
हरिदास सुभक्त सुगीत रयो। तेहि मां कछु सब्द असुद्ध भयो ॥
सुधराये मुनी पै न बोध भयो। निसु कानिन में अवरोध भयो ॥
सपने मुनि ते रघुबीर कयो। नहिं सुद्ध असुद्ध सुभाव गयो ॥

तब जाइ मुनी तिसु भाव भरो । जस गावत हौ तस गाया करो ॥
सुनि बालचरित्र अनंदित ह्वै । मुनि तुष्ट किये सुपटंबर दै ॥

दो०—देव मुरारी भेंट मिलि, सहित मलूकादास ।
पहुँचे कासी में रिपय, किये अपंड निवास ॥ ८३ ॥

सुचि माघ में गंग नहाय हते । सरि भीतर मंत्र महा जपते ॥
तन वृद्ध सो कांपत रोम अड़े । गनिका रहि देखत तीर पड़े ॥
कढ़िकै मुनि सींचेउ बस्त्र धरे । दुइ बुंद सोई गनिका पै परे ॥
बेस्या मन में निरवेद जगो । बहु दस्य निरय दिपरान लगो ॥
सब पाप प्रपंच ते दूर भगी । उपदेस ले हरिगुन गान लगी ॥
हरिदत्त सु विप्र दरिद्र महा । तिसु गंग के पार में बास रहा ॥
मुनि के ढिग आय विपत्ति कही । जस दीन दसा घर केर रही ॥
रिपि अस्तुति गंग बनाय करी । सुरसरि दै भूमि बिपत्ति हरी ॥

दो०—निंदक मुनि अरु भगतिपथ, भुलई साहु कलार ।
निधन भयउ टिकठी धरे, लैगे फूंकनहार ॥ ८४ ॥

तास तिया रोवत चली, मुनि ढिग नायउ सीस ।
सदा सोहागिन रहहु तुम, मुनिवर दीन्ह असीस ॥ ८५ ॥

बिलपि कही सो निज दसा, सब मुनि लिये मँगाय ।
चरनामृत मुख देइकै, तुरतै दिये जियाय ॥ ८६ ॥

तेहि वासर ते मुनि नेम लिये । अरु बाहिर बैठव त्यागि दिये ॥
रहे तीन कुमार बड़े सुकृती । मुनि चरनन में तिनकी भगती ॥
रिपिकेप रह्यो मनिकरनिका पैं । बिसुनाथ के मंदिर सांति पदै ॥
अनपुरना में दाता दीन रहै । रहनी गहनी सम साम गहै ॥

मुनि दरशन को नित आवत जू। चरनोदक लै घर जावत जू॥
पहिचानि सुप्रीति मुनी तिनकी। सुचि टेक विवेक समीचिन की॥
तिनके हित ही बहिरांय मुनी। दैके दरसन भितरांय पुनी॥
सब दरसक बृंद चवाव करैं। मुनि पैं पछपात को दोष धरैं॥
दिन एक परीच्छा लीन मुनी। बहिराये नहीं सोइ भाव गुनी॥
तन तीनिउ ता छिन त्यागि किये। चरनोदक जीवन दान दिये॥

दो०—सोरह सै उनहत्तरो, माधव सित तिथि थीर।
पूरन आयू पाइकै, टोडर तजै सरीर॥ ८७॥
मीत विरह में तीन दिन, दुषित भये मुनि धीर।
समुझि समुझि गुन मीत के, भरयो विलोचन नीर॥ ८८॥
पांच मास बीते परे, तेरस सुदी कुआर।
जुग सुत टोडर बीच मुनि, बांटि दिये घर बार॥ ८९॥
नष-सिष कर्ता आसु कवि, भीषमसिंह कनगोय।
आयो मुनि दरसन कियो, त्यागेउ तन हरि जोय॥ ९०॥
गंग कहेउ हाथी कवन, माला जपेउ सुजान।
कठमलिया बंचक भगत, कहि सो गयो रिसान॥ ९१॥
छमा किये नहि स्राप दिय, रंगे सांति रस रंग।
मारग में हाथी कियो, झपटि गंगतन भंग॥ ९२॥
कवि रहीम बरवै रचै, पठये मुनिवर पास।
लषि तेइ सुंदर छंद में, रचना कियो प्रकास॥ ९३॥
मिथिला में रचना किये, नहछू मंगल दोय।
मुनि प्रांचे मंत्रित किये, सुख पावें सब कोय॥ ९४॥

बाहु पीर व्याकुल भये, बाहुक रचे सुधीर ।
पुनि बिराग संदीपनी, रामाज्ञा सकुनीर ॥ ९५ ॥

पूर्व रचित लघु ग्रंथननि, दोहराये मुनि धीर ।
लिपवाये सब आन ते, भो अति छीन सरीर ॥ ९६ ॥

जहांगीर आयो तहां, सत्तर संवत बीत ।
धन धरती दीबो चहै, गहे न गुनि बिपरीत ॥ ९७ ॥

बिरवल की चर्चा भई, जो पटु बागविलास ।
बुद्धि पाइ नहिं हरि भजे, मुनि किय पेद प्रकास ॥ ९८ ॥

अवधपुरी को चोहड़ा, हैं अवधबासि प्रिय जानि ।
हृदय लगाये प्रेमबस, रामरूप तेहि मानि ॥ ९९ ॥

सिद्ध बृंद गिरिनार के, नभ ते उतरे आय ।
करि दरसन पुलकित भये, प्रश्न किये सतिभाय ॥१००॥

सो०—तुमहिं न व्यापै काम, अति कराल कारन कवन ।
कहिय तात सुपधाम, जोग प्रभाव कि भगति बल ॥ १९ ॥

दो०—जोग न भगति न ग्यान बल, केवल नाम अधार ।
मुनि उत्तर सुनि मुदित मन, सिद्ध गये गिरिनार ॥१०१॥

बैठि रहे मुनि घाट पर, जुरै लोग बहुताय ।
आयो भाट सुचंदमनि, बिनय कियो परि पाय ॥१०२॥

सवैया

पन दोइक भोग बिषय अरुज्ञान अब जो रह्यो सो न पसाइय जू ।
अब लौं सब इंद्रिन लोग हंस्यो अब तो जनि नाथ हंसाइय जू ॥

मद मोह महा पल काम अनी मम मानस ते निकसाइय जू ।
रघुनंदन के पद के सदके तुलसी मोहि कासि बसाइय जू ॥ १ ॥

दो०—बिनय सुनत पुलकित भये, कहि रिषिराज महान ।
बसहु सुपेंन इतै सदा, करहु राम गुन गान ॥१०३॥
हत्यारा ढिग आयऊ, बिप्र चंद तिसु नाम ।
दूर ठाढ़ बोलत भयो, राम राम पुनि राम ॥१०४॥
इष्ट नाम सुनि मगन भे, तुरत लिये उर लाय ।
आदर जुत भोजन दिये, हरषि कहे रिषिराय ॥१०५॥
तुलसी जाके मुपनि ते, धोपेहु निकसे राम ।
ताके पग की पैतरी, मोरे तन को चाम ॥१०६॥
समाचार व्याप्यो तुरत, बांधिन बांधिन मांझ ।
ग्यानी ध्यानी बिप्र भट, सुधी जुरै भइ सांझ ॥१०७॥
कैसे घातक सुद्ध भो, कहिये संत महान ।
कहे जु नाम प्रताप ते, बांचहु बेद पुरान ॥१०८॥
कह्यौ लिख्यौ तौ है सही, होत न पै बिस्वास ।
मन माने जाते कहिय, सोइ कर्त्तव्य प्रकास ॥१०९॥
कहे जो सिव को नादिया, गहै तास कर ग्रास ।
तब तो निस्चय उपजही, सबके मन बिलास ॥११०॥
मुनि प्रसाद ऐसहि भयो, चहुं दिसि जयजयकार ।
निंदक मांगे छमा सब, पग परि बारंबार ॥१११॥
राम नाम दिन भर रटैं, छोभ बिबस मुनि प्रान ।
साँझ समय तेहि बिप्र कह, द्रव्य देत हनुमान ॥११२॥

राम दरस हित कमलभव, हठेउ कहेउ मुनिराय ।
तरु ते कूदि त्रिसूल पै, दरस लेहु किन जाय ॥११३॥
गाड़ि सूल अरु त्रिटप चढ़ि, हिम्मत हारेउ पात ।
लषेउ पछाहीं बीर इक, अस्व चढ़े मग जात ॥११४॥
पूछेउ मर्म कहेउ कथा, सो चढ़ि त्रिटप तुरंत ।
कूदेउ उर बिस्वास धरि, दीन दरस भगवंत ॥११५॥
अंत समय हनुमत दिये, तत्त्व ग्यान को बोध ।
राम नाम ही बीज है, सृष्टि बृच्छमय ग्रोध ॥११६॥
पर प्रस्थान की सुभ घड़ी, आयो निकट बिचारि ।
कहेउ प्रचारि मुनीस तब, आपन दसा निहारि ॥११७॥
रामचंद्र जस बरनि कै, भयो चहत अब मौन ।
तुलसी के मुष दीजिये, अब ही तुलसी सोन ॥११८॥
संवत सोरह सै असी, असी गंग के तीर ।
सावन स्यामा तीज सनि, तुलसी तज्यो सरीर ॥११९॥
मूल गोसाईं चरित नित, पाठ करै जो कोय ।
गौरी सिव हनुमत कृपा, राम परायन होय ॥१२०॥
सोरह सै सत्तासि सित, नवमी कातिक मास ।
बिरच्यो यहि निज पाठ हित, बेनीमाधवदास ॥१२१॥

इति श्रीवेणीमाधवदासकृत मूल गोसाईंचरित समाप्त ॥

श्रीसूगण्डिल्यगोत्रोत्पन्नपंक्तिपावनत्रिपाठीरामरक्षमणिरामदासेन तदात्मजेन च लिखितम् ।

मिति विजयादशमी संवत् १८४८ भृगुवासरे ।

श्रीहरिः

गीताप्रेस, गोरखपुर

की

पुस्तकोंकी संक्षिप्त

सूची

—

माघ १९९०

---

(१) पुस्तकोंका विशेष विस्तार तथा पूरा नियम जाननेके लिये बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगाइये।

(२) हमारे यहाँ अनेक प्रकारके धार्मिक छोटे, बड़े, रंगीन और सादे चित्र मिलते हैं। विशेष जानकारीके लिये चित्र-सूची मँगाइये।

(१) हर एक पत्रमें नाम, पता, डाकघर, जिला बहुत साफ देवनागरी अक्षरोंमें लिखें। नहीं तो जवाब देने या माल भेजनेमें बहुत दिक्कत होगी। साथ ही उत्तरके लिये जवाबी कार्ड या टिकट आना चाहिये।

(२) अगर ज्यादा किताबें मालगाड़ी या पार्सलसे मँगानी हों तो रेलवे-स्टेशनका नाम जरूर लिखना चाहिये।

(३) थोड़ी पुस्तकोंपर डाकखर्च अधिक पड़ जानेके भयसे एक रुपयेसे कमकी वी० पी० प्रायः नहीं भेजी जाती, इससे कमकी किताबोंकी कीमत, डाकमहसूल और रजिस्ट्री-खर्च जोड़कर टिकट भेजें।

(४) एक रुपयेसे कमकी पुस्तकें बुकपोस्टसे मँगवानेवाले सज्जन ।) तथा रजिस्ट्रीसे मँगवानेवाले ।≈) (पुस्तकोंके मूल्यसे) अधिक भेजें। बुकपोस्टका पैकेट प्रायः गुम हो जाया करता है, अतः इस प्रकार खोयी हुई पुस्तकोंके लिये हम जिम्मेवार नहीं हैं।

कमीशन-नियम

१) से कमकी पुस्तकोंपर कमीशन नहीं दिया जाता। १) से ५) तक ६।) सैकड़ा, ५) से १०) तक १२॥) सैकड़ा, फिर २५) तक १८॥।) सैकड़ा, इससे ऊपर २५) सैकड़ा दिया जाता है।

३०) की पुस्तकें होनेसे ग्राहकको रेलवे-स्टेशनपर मालगाड़ीसे फ्री डिलेवरी दी जायगी। परन्तु सभी प्रकारकी पुस्तकें लेनी होंगी, केवल गीता नहीं। दीपावलीसे दीपावलीतक १०००) नेटकी पुस्तकें सीधे आर्डर भेजकर लेनेवालोंको ३) सैकड़ा कमीशन और दिया जायगा। जल्दीके कारण रेलपार्सलसे मँगवानेपर आधा भाड़ा दिया जायगा। इससे अधिक कमीशनके लिये लिखा-पढ़ी न करें।

*प्रेम-योग—सचित्र, लेखक—श्रीवियोगी हरिजी, पृष्ठ ४२०, बहुत मोटा एण्टिक कागज, मूल्य अजिल्द १।), सजिल्द ... १॥)

श्रीकृष्ण-विज्ञान—अर्थात् श्रीमद्भगवद्गीताका मूलसहित हिन्दी-पद्यानुवाद, गीताके श्लोकोंके ठीक सामने ही कवितामें अनुवाद छपा है। दो चित्र, पृष्ठ २७५, मोटा कागज, मू० ॥।), स० १)

विनय-पत्रिका—सरल हिन्दी-भावार्थ-सहित, ६ चित्र, अनुवादक—श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार, मू० १), सजिल्द ... १।)

†भगवतरत्न प्रह्लाद—३ रङ्गीन, ५ सादे चित्रोंसहित, पृष्ठ ३४०, मोटे अक्षर, सुन्दर छपाई, मूल्य १) सजिल्द ... १।)

श्रीश्रीचैतन्य-चरितावली (खण्ड १)—सचित्र, श्रीचैतन्यदेवकी बड़ी जीवनी। पृष्ठ ३६० मू० ॥।≈), सजिल्द ... १≈)

श्रीश्रीचैतन्य-चरितावली (खण्ड २)—सचित्र, अभी छपी है। अवश्य देखें। पृष्ठ ४५०, मूल्य १≈), सजिल्द ... १।≈)

श्रीमद्भागवतान्तर्गत एकादश स्कन्ध—सचित्र, सटीक, पृष्ठ ४२०, मूल्य केवल ॥।) सजिल्द ... १)

देवर्षि नारद—२ रंगीन, ३ सादे चित्रोंसहित, पृष्ठ २४०, सुन्दर छपाई, मूल्य ॥।), सजिल्द ... १)

तत्त्व-चिन्तामणि भाग १—सचित्र, लेखक—श्रीजयदयालजी गोयन्दका, यह ग्रन्थ परम उपयोगी है। इसके मननसे धर्ममें श्रद्धा, भगवान्में प्रेम और विश्वास एवं नित्यके वर्तावमें सत्य व्यवहार और सबसे प्रेम, अत्यन्त आनन्द एवं शान्तिकी प्राप्ति होती है। पृष्ठ ३५०, मूल्य ॥≈), सजिल्द ... ॥।-)

तत्त्व-चिन्तामणि भाग २—सचित्र, लोक और परलोकके सुख-साधनकी राह बतानेवाले सुविचारपूर्ण सुन्दर-सुन्दर लेखोंका अति उत्तम संग्रह है। ६०० से ऊपर पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य प्रचारार्थ केवल ॥।≈) रक्खा गया है। यह अभी छपी है। एक पुस्तक अवश्य मँगवावें।

नैवेद्य—श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारके २८ लेख और ६ कविताओंका सचित्र नया सुन्दर ग्रन्थ, पृ० ३५०, मू० ॥≠), स० ... ॥।-)

श्रीज्ञानेश्वर-चरित्र—दक्षिणके अत्यन्त प्रसिद्ध, सबसे अधिक प्रभाव-

---

*-† दुबारा छपनेपर मिल सकेगा।

ज्ञानी भक्त, 'श्रीज्ञानेश्वरी गीता' के रचयिता श्रीज्ञानेश्वरजीकी जीवनी और उनके उपदेशोंका संग्रह। पृष्ठ ८८ अवश्य पढ़ें। सचित्र, पृष्ठ २९६, मू० ... ... ॥-)

विष्णुसहस्रनाम—शांकरभाष्य हिन्दी-अनुवादसहित, नाम-अनुक्रमणिका, इसमें ही उसका अर्थ छापा गया है। नित्य-पाठके लोगोंमें सबसे अधिक प्रचार विष्णुसहस्रनामका ही है। भगवान्‌के नामोंके रहस्य जाननेके लिये यह ग्रन्थ उपयोगी है, मूल्य ॥=) मूल सुलभ रखा है। अर्थ जानकर पाठ करनेसे मन अति आनन्दमग्न होता है।

श्रुति-रत्नावली—लेखक—स्वामीजी श्रीभोलेबाबाजी, खास-खास श्रुतियोंका अर्थसहित संग्रह; एक पेजमें मूल श्रुतियाँ और उसके सामनेके पेजमें उनके अर्थ रक्खे गये हैं, मू० ॥)

तुलसी-दल—लेखक—श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार, इसमें छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष, आस्तिक-नास्तिक, विद्वान्-मूर्ख, भक्त-ज्ञानी, गृहस्थी-त्यागी, कला और साहित्य-प्रेमी सबके लिये कुछ-न-कुछ उन्नतिका मार्ग मिल सकता है। पृष्ठ २६४, सचित्र, मू० ॥), स० ॥=)

श्रीएकनाथ-चरित्र—ले०—हरिभक्तिपरायण पं० लक्ष्मण रामचन्द्र पांगारकर, भाषान्तरकार—पं० श्रीलक्ष्मण नारायण गर्दे। हिन्दीमें एकनाथ महाराजकी जीवनी अभीतक नहीं छपी, मूल्य ... ॥)

दिनचर्या—(सचित्र) उठनेसे सोनेतक करनेयोग्य धार्मिक बातोंका वर्णन। नित्य-पाठके योग्य स्तोत्र और भजनों सहित। मूल्य ॥)

विवेक-चूडामणि—(सानुवाद, सचित्र) पृ० २२४, मू० ।=) स० ॥≠)

श्रीरामकृष्ण परमहंस—(सचित्र) इस ग्रन्थमें इनके जीवन और ज्ञानभरे उपदेशोंका संग्रह है। पृ० २५०, मूल्य ... ।=)

भक्त-भारती—७ चित्र, कवितामें ७ भक्तोंकी सरस गाथाएँ, मू० ।=), स० ॥≠)

भक्त-बालक—गोविन्द, मोहन आदि बालक-भक्तोंकी कथाएँ हैं, ।-)

भक्त-नारी—स्त्रियोंमें धार्मिक भाव बढ़ानेके लिये बड़ी उपयोगी कथाएँ हैं।-)

भक्त-पञ्चरत्न—यह पाँच कथाओंकी पुस्तक सबके [illegible] लिये बड़े कामकी है।-)

आदर्श भक्त—राजा शिबि, रन्तिदेव, अम्बरीष आदिकी कथाएँ, ७ चित्र, मू० ।-)

भक्त-चन्द्रिका—भगवान्‌के प्यारे भक्तोंकी मीठी-मीठी बातें, ७ चित्र, मू० ।-)

भक्त-सप्तरत्न—सात भक्तोंकी मनोहर गाथाएँ, ७ चित्र पृष्ठ १०६ मू० ।-)

भक्त-कुसुम—छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष सबके पढ़ने योग्य प्रेम भक्तिपूर्ण ग्रन्थ ।-)

गीतामें भक्ति-योग—(सचित्र) लेखक—श्रीवियोगी हरिजी ... ।-)

परमार्थ-पत्रावली—श्रीजयदयालजी गोयन्दकाके ५१ कल्याणकारी पत्रोंका संग्रह, पृष्ठ १४४, एण्टिक कागज, मूल्य ... ।)

पता—गीताप्रेस, गोरखपुर

चित्र

छोटे, बड़े, रंगीन और सादे धार्मिक चित्र

श्रीकृष्ण, श्रीराम, श्रीविष्णु और श्रीशिवके दिव्य दर्शन।

जिसको देखकर हमें भगवान् याद आवें, वह वस्तु हमारे लिये संग्रहणीय है। किसी भी उपायसे हमें भगवान् सदा स्मरण होते रहें तो हमारा धन्यभाग हो। भक्तों और भगवान्के स्वरूप एवं उनकी मधुर मोहिनी लीलाओंके सुन्दर दृश्य-चित्र हमारे सामने रहें तो उन्हें देखकर थोड़ी देरके लिये हमारा मन भगवत्स्मरणमें लग जाता है और हम सांसारिक पाप-तापोंको भूल जाते हैं।

ये सुन्दर चित्र किसी अंशमें इस उद्देश्यको पूर्ण कर सकते हैं। इनका संग्रहकर प्रेमसे जहाँ आपकी दृष्टि नित्य पड़ती हो, वहाँ घरमें, बैठकमें और मन्दिरोंमें लगाइये एवं चित्रोंके बहाने भगवान्को यादकर अपने मन-प्राणको प्रफुल्लित कीजिये। भगवान्की मोहिनी मूर्तिका ध्यान कीजिये।

कागजका साइज १० इञ्च चौड़ा, १५ इञ्च लम्बा, सुनहरी चित्रका ~)॥, रंगीन चित्रका मूल्य ~), दोरंगके और सादे चित्रका मूल्य)॥।, यह छोटे ब्लाकोंसे ही बेल (बार्डर) लगाकर बड़े कागजोंपर छापे गये हैं।

कागजोंका साइज ७॥ × १० इञ्च, सुनहरीका मूल्य ~), रंगीनका मूल्य)॥।, सादेका)॥ मात्र।

इनके सिवा १८ × २२, १५ × २० और ५ × ७॥ के बड़े और छोटे चित्र भी मिलते हैं।

दूकानदार और थोक-खरीदारोंको कमीशन भी दिया जाता है।
चित्रोंकी सूची अलग मुफ्त मँगवाइये।

पता—गीताप्रेस, गोरखपुर

